Sri – Om
VEDIC MATHEMATICS AWARENESS YEAR

E-Newsletter Issue no 144 dated 27-03-2015
For previous issues and further more information visit at www.vedicganita.org

ॐ । गायत्री छन्द । सरसवती मंत्र। महेश्वर सूत्र। गणित सूत्र

Om Gyatri Chand, Saraswati Mantra, Maheshwar Sutra, Ganita Sutras

वैदिक गणित (सूर्य रश्मियो का गणित)	Vedic Mathematics (Sunlight format Mathematics)
I. देवनागरी वर्णमाला II. जड़ भरत III. वर्णो की उत्पति IV. पंचीकरण V. ज्योति व्यूह अंक VI. आ ब्रह्म् भुवन लोक VII बीज अक्षर VIII श्री ॐ	I. Devnagri alphabet II. Jad Bharat III. Creation of letters IV. 5 x 5 format V. Transcendental code value VI. Along organization format of elongated first vowel VII Seeds syllables VIII Sri Om
IX देवनागरी लिपि	IX Devnagri script
देवनागरी लिपि के ज्योमिति आधार पर पहुंचने के लिये हमे सभी वर्णो की आकृतियो पर ध्यान देना होगा। क्योकि आकृतियो का आधार 'धरातल' पटल है, इसलिये यहा धरातल की ज्योमिति के गुणो के आधार पर इन आकृतियो का वर्गीकरण करना होगा।	For reaching at the geometrical basis of Devnagri script, we have to attend to the script forms of individual letters of Devnagri alphabet. As the base of script curves is the surface format, as such the spatial geometry is to be attended to.
वर्ग व वृत दो ऐसी आकृतिया है जो कि मौलिक आकृतिया है।	Square and circle are two basic curves (shapes).
वर्ग वा वृत धरातल क्षेत्र को सीमित परिधि मे बंधी व्यवस्था के गुणो वाली आकृतिया है।	These shapes / curves are of the organization arrangement of enclosed surfaces.
धरातल के क्षेत्र की परिधि, वर्ग के परिक्षेप मे चार सीधी रेखाये है तथा वृत	In the context of the perimeter / boundary of square, there is a set of four line

के परिक्षेप मे परिधि गोलाकार है।	however perimeter / circumference of circle is a spatial line.
इस तरह से बिन्दु, रेखा व धरातल गुणो वाली तीन प्रकार की आकृतियो के अंग सामने आते है।	Like that point, line and surface emerge as the basic components.
बिन्दु जब रेखा पर होता है और जब धरातल पर होता है तो अपने स्थान के अनुसार रेखा व धरातल के गुणो वाला होता है।	The point when it is on the line or is in the surface, same is of structures of line and surface respectively.
इस तरह से बिन्दु के गुण उसकी स्थापना / स्थापत्य स्थान के अनुसार संरचना वाला होता है।	Like that point is structured as per its placement base
इसी तरह से रेखा भी अपनी स्थापना / स्थापत्य स्थान के अनुसार गुणो वाली होती है।	Like that line as well is of structural features as per its placement base
तथा धरातल सत्ता भी अपनी स्थापना / स्थापत्य स्थान के अनुसार गुणो वाली होती है।	And, surface as well are of structural values as per their placement features
धरातल मे रेखाएं कोण बनाती है।	Lines constitute angles in surfaces.
कोण की दोनो भुजाये अलग अलग दिशा वाली होती है।	The lines of 'angle' are of their respective directions formats.
इस तरह से कोण तथा दिशा के अनुसार भी आकृतियो के विशेष तक पहुंचा जाता है।	As such the special features of curves / shapes can be reached at in terms of angles and directions.
दस दिशाओ की व्यवस्था के अनुसार त्रिलोकी बांधा जाता है।	3-space is framed in terms of the set up of ten directions.
इस व्यवस्था मे वर्ग की परिधि की भुजाओ से अलग वर्ग के कर्णो की व्यवस्था सामने आती है।	This organization distinguishes arrangements of sides of the square from that of the diagonal of the square.
वर्ग व वृत के केन्द्र बिन्दुओ का इस	The centers of square and circle have their own placement and contribution in such

व्यवस्था मे अपना स्थान व योगदान है। इन केन्द्र बिन्दुओ के माध्यम से अर्ध मात्रा वाली व्यवस्था की संरचना होती है।	organization and arrangement (of angles, directions, sides and diagonals).
इन गुणो के परिक्षेप मे ५ x ५ वर्ग वर्णो की आकृतियो के मूल खण्डो को पहचान कर उनका वर्गीकरण किया जा सकता है।	In this background the basic components of the script form and frames of 5 x 5 varga consonants can be classified and grouped.
उदाहरण के तौर पर प्रथम व्यंजन 'क्' की आकृति के दो मूल खण्ड आकृतिया है। १. वृत वा २. स्वास्तिक पाद।	Illustratively the script form and frame of first consonant / first varga consonant ('क्') is having a pair of basic components. 1. Circle and 2. Quarter of Swastik
यहां ये भी ज्ञातव्य हो के ये दो आकृतियो के खण्ड एक खड़ी रेखा से अपने आप को अलग किये हुये है।	It also would be relevant to note here that these two components are separated by one vertical line.
इससे ये जानकारी मिलती है कि आकृति के लिये दो खण्ड अपनी अपनी स्थापना अलग अलग वर्ग मे स्थापत्य स्थान वाली है।	This leads to comprehension that both these components are having their placement in distinct squares
यहां ये भी ये ज्ञातव्य हो कि स्वास्तिक पाद का स्थापत्य स्थान एक वर्ग आधार वाला होने से, स्वास्तिक की व्यवस्था चार वर्गो के आधार वाली ठहरती है।	Here it also would be relevant to note that swastik placement is of four squares set up as one quarter accepts a square placement.
इस तरह से दो खण्डो वाली आकृति 'क्' हमे पहले स्तर पर चार वर्गो के आधार पर पहुंचाती है तथा उसके पश्चात दूसरे स्तर पर आधार आठ वा सोलह वर्गो की व्यवस्था वाला ठहरता है।	As such script form of letter 'क्' being of two components, the same at first stage accepts four squares format. there after at second stage the base format becomes of 8 or 16 squares set up.
इसी तरह से सभी पच्चीस वर्गा व्यंजन इन्ही स्तरो की व्यवस्था वाले उभर कर हमारे सामने आते है।	Like that emerge the formats of all the 5 x 5 varga consonants.
स्वरो का क्रम वा उनकी मात्राओ की अलग से आकृतिया केवल सांकेतिक आकृतिया नही है। ये आकृतियो के	The sequence and measure values of 9 vowels are not symbolic. These are as per the rules of formation of syllables by

धरातल के वर्गीकरण के अनुसार व्यंजनो को मिलाकर अक्षर बनाने के नियमो के अनुसार है।	combining consonants with vowels
अन्तःस्थ तथा उष्मना व्यंजनो की आकृतिया विशेष गुणो वाली है।	The antshta and ushmana letters script forms are of special features.
आगे यमो के चिन्ह सूक्ष्म व्यवस्था को अपनाने बारे है तथा ये बिन्दु वृत से बिन्दु गोलाकार अण्ड की प्राप्ति बारे विधि विधान के अनुसार है। स्वरो की मात्राओ से भिन्न स्वरो की आकृतिया, अपने आप मे अण्ड से पिण्ड को धारण करने वाली आकृतियो के नियम अनुसार है।	Ahead, the expressions of script forms of yama letters are for approach to micro state. And these are settled as per the reach from point to point square and point sphere / egg. The script forms of vowels, distinct than that of their measures, are for adoption of bodies parallel to the set up of the universe.
इन आकृतियो मे ज्योमिति के कई विशेष नियम सुरक्षित है।	These script forms and frames preserve many values of Geometry.
ज्योमिति के आधार पर संख्याओ की व्यवस्था योगनिष्टा व साख्यंनिष्टा का समन्वय रहता है। इस योगनिष्टा और सांख्यनिष्टा की समन्वय व्यवस्था के अनुसार एक एक वर्ण के विशेष गुणो तक पहुंचा जाता है।	The numbers operations are geometric formats are of features of artifices of numbers and dimensional frames. With this parallel features of yog Nishtha and Sankhiya Nishtha, reach can be had at the special values of individual letters.
आगे वर्णो से अक्षरो तक की पहुंच होती है।	Ahead is the reach from letters to syllables.
अक्षरो से शब्द विज्ञान मे प्रवेश होता है।	From syllables reach is to be the domain of words.
इसी प्रवेश अनुसार ऋक्, यजु, साम व अथर्व मुल्यो की स्थापना हो रही है। ये स्थापना मण्डलो की स्थापना के समान्तर चलती है।	Like that is the settlement of the format of Rik, Yajur, Sama, Atharav. This settlement goes parallel to the settlement of the format of the mandal.
*	*
...क्रमश	...to be continued
२७-०३-२०१५ डा. सन्त कुमार कपूर	27-03-2015 Dr. Sant Kumar Kapoor